ओम शान्ति 24-6-12 ओ.आर.सी

मम्मा निमित्त विशेष भोग तथा वतन से प्राप्त मधुर सन्देश - (गुल्जार दादी)

(हम सबकी अति स्नेही मीठी गुल्जार दादी चाइना, जापान हांगकांग में अपनी सेवायें देते हुए 24 जून को सवेरे दिल्ली ओ.आर.सी. पहुंची। जहाँ पर विशेष मम्मा डे के निमित्त कुमार कुमारियों के लिए योग भट्ठी तथा शाम के समय ब्राह्मण परिवार का संगठन था, जिसमें करीब 1800 भाई बहिनें सम्मिलित हुए। दोपहर में दिल्ली की पुरानी मम्मा बाबा की पालना ली हुई दादियों ने तथा अन्य भाई बहिनों ने मम्मा के अंग संग के बहुत सुन्दर अनुभव सुनाये। ब्रह्माभोजन हुआ तथा शाम के समय विशेष दादी जी वतन में गई, बापदादा के साथ मीठी माँ को भी भोग लगाया, तो बाबा ने कुछ समय के लिए मीठी माँ को बच्चों से मिलने के लिए साकार वतन में भेजा, मम्मा ने काफी समय तक सबको मीठी दृष्टि दी, फिर दादी जी वतन से वापस आई और जो सन्देश सुनाया वह इस प्रकार है:)

दिव्य सन्देश:-

हम आप सबसे मिलन मनाते हुए बाबा के पास पहुंची, तो वहाँ क्या देखा कि बाबा और मम्मा दोनों ही आपस में मिलन मनाते बात-चीत कर रहे थे। बाबा भी मम्मा को बहुत स्नेह और शक्ति की दृष्टि से देख रहे थे, मम्मा बहुत-बहुत-बहुत खुश हो रही थी। मम्मा की सूरत से लग रहा था कि मम्मा मिलन मनाते हुए अन्दर ही अन्दर बहुत खुश हो रही हैं और वाह बाबा वाह! उनके चेहरे पर आ रहा था। तो मैं जब पहुंची तो बाबा ने कहा मम्मा देखो आपके लिए सन्देश आ गया। बच्चों ने आपको बहुत याद किया है। मम्मा मुस्कराई, बाबा ने मम्मा को कहा कि मम्मा आज तो आपका ही पार्ट है। बाबा तो आपके साथ है ही लेकिन आज विशेष आपका ही दिन है। सुबह से लेके वतन में बहुत रौनक लगी हुई है। भिन्न-भिन्न प्रकार के भोग सभी आपको स्वीकार करा रहे हैं। तो मम्मा मुस्करा रही थी और बाबा मम्मा को देख-देख हर्षित हो रहा था। मैंने कहा बाबा सभी को मम्मा और बाबा दोनों ही बहुत प्यारे हैं। आज सभी मम्मा को याद कर रहे हैं, तो आप मम्मा को भेज दो तो मम्मा मिलन मनाके आये।

फिर बाबा ने मम्मा को कहा आज तो आपका ही दिन है। मम्मा ने कहा मैं तो मिलूंगी लेकिन आप भी साथ चलें तो अच्छा है। ऐसे कहते ही थोड़े टाइम में मम्मा बाबा का मिलन और प्यार देखते मैं मगन थी। फिर थोड़े टाइम में बाबा मर्ज हो गये फिर मम्मा ही रह गई। मम्मा ने कहा आज बाबा को मम्मा ही याद है, तो बच्चों को भी मम्मा याद है। मम्मा जैसे ही थोड़ा आगे बढ़ी तो बहुत बड़ी सभा बच्चों की मम्मा के आगे आ गई। जिसमें हमारे मुख्य भाई-बहनें और सेन्टर के भाई-बहनें भी थे। साथ-साथ जो बहुत अच्छे ज्ञान में चलने वाले भाई-बहनें हैं, उनकी सभा शान्तिवन के बड़े हॉल से भी बड़ी सभा थी। मम्मा सभी को प्यार से देखते एक-एक को दृष्टि दे रही थी। मम्मा ने प्यार देते हुए ऐसे हाथ किया तो ऑटोमेटिकली हाथ घूमता-घूमता हुआ सभी के सिर के ऊपर आया और ऐसे लगा जैसे मम्मा सबको प्यार देते हुए मिलन मना रही है। मम्मा ने सभी को एक हाथ से वरदान दिया। उसके बाद मम्मा ने कहा बाबा का प्यार बच्चों से कितना है? आपको बाबा टाइटिल ही देता है कि मेरे नयनों के नूर हो, मेरे मस्तक के राजा हो, बादशाह हो। बाबा कितना प्यार करता है! बाबा के प्यार का शब्द है - यह मेरे बच्चे मेरी आशाओं के दीपक हैं। तो मम्मा ने पूछा कि बाबा की आशायें क्या हैं, वह तो आप सबको पता हैं ना! तो सभी नयनों से हाँ कर रहे थे। मम्मा ने कहा देखो बाबा की एक ही सब बच्चों में आश है, कि मेरे बच्चे एक-एक मेरे समान और सम्पूर्ण बन फरिश्ता बनें। तो यह जो बाबा की आश है वो आप बच्चों को पूर्ण करनी ही है। मम्मा कह रही थी कि एक-एक बच्चा विजयी रत्न बन जाये। जरा भी माया वार नहीं करे, ऐसे बाबा हरेक बच्चे को महावीर देखने चाहता है। एक-एक बच्चा मेरी विजय माला का मणका बन जाये। ऐसे मम्मा मिलन मनाते एक-एक बच्चे को देखकर बहुत प्यार से बोल रही थी। सभी बहुत मुस्करा रहे थे।

फिर मम्मा ने कहा कि आज आप सभी बच्चों ने मम्मा को याद किया तो मम्मा जैसा तो बनना पड़ेगा ना। जैसे बाबा मम्मा को कहता है कि मेरी विजयी बच्ची है। ऐसे हरेक बच्चे को विजयी बच्चा बनना पड़ेगा। विजयी बनने के लिए क्या करना पड़ेगा? सिर्फ आप जब अमृतवेले मिलन मनाते हो, उस समय शक्ति लेने के बाद अपने से यह संकल्प करो कि आज मेरे

सामने माया का कोई भी विघ्न आवे लेकिन मुझे दृढ़ संकल्प द्वारा विजयी बनना ही है। हरेक आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभकामना रखनी ही है। फिर रात्रि को चेक करो तो सभी के प्रति शुभ भावना, शुभकामना रही? कोई कुछ भी कहे, कुछ भी करे लेकिन मेरी सबके प्रति शुभ भावना और शुभकामना ही रहे, क्या मेरा यह संकल्प सारे दिन में पूरा हुआ? अगर कमी पड़ी, कोई बातें आई, शुभकामना पूरी नहीं रही, तो उस समय बाबा से माफी ले लो। मम्मा ने कहा अभी माफी ले लेंगे, तो बाबा बच्चों पर राज़ी हो जाता है। नहीं तो धर्मराजपुरी में जाना पड़ेगा। ऐसे मम्मा बातें कर रही थी।

फिर मम्मा ने कहा कि आज आप सभी मिलकरके दृढ़ संकल्प करो कि विजयी बन विजयी बनाने की सेवा करनी है। फिर मम्मा ने सेन्टर हेड से मिलन मनाया। मम्मा ने उन्हें कहा कि देखो आप सब निमित्त हो, निमित्त जो होता है उसको सदा सर्व के प्रति यही संकल्प शुभ रहे कि इनका कल्याण हो। ऐसी शुभभावना, शुभ कामना सभी के प्रति रहनी चाहिए।

फिर जो आगे-आगे बड़ी बहनें बैठी थी उन्हों को कहा चलो आपको बाबा से मिलाते हैं। तो मम्मा सभी को लेकर बाबा के पास गई, बाबा ने सभी को मीठी दृष्टि दी। मम्मा ने बाबा से कहा बाबा आपकी इनके प्रति क्या आश है? बाबा ने कहा एक ही आश है कि अब समाप्ति के समय को समीप लाओ। अभी दु:ख बढ़ता जा रहा है। आपको मन में आना चाहिए तो हमारे भाई-बहन दु:खी, अशान्त हो रहे हैं। तो आपको यह संकल्प होना चाहिए कि अब अच्छे समय को, अपने राज्य को समीप लायें। तो सभी मुस्करा रहे थे। बाबा ने कहा अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है, समय बहुत नाज़ुक होता जा रहा है और होने वाला है इसलिए सभी को अभी दृढ़ सकल्प करना है कि हमको अपने राज्य का समय आह्वान करके जल्दी लाना है। सभी दृष्टि से हाँ-हाँ कर रहे थे। बाबा बहुत खुश हो रहा था, मम्मा को कहा ये बच्चे तो तीव्र पुरुषार्थ करके समय को आगे लाने वाले ही हैं।

फिर बाबा और मम्मा दोनों ही मिलकर एक-एक बच्चे को दृष्टि देते आगे बढ़ते जा रहे थे। दृष्टि जब दे रहे थे तो सबके नयनों में ऐसे प्यार था जो मम्मा बाबा को देखकर सभी लवलीन स्थिति में थे। ऐसे मम्मा बाबा से सभी ने मुलाकात की फिर बाबा ने मम्मा को कहा कि आपके लिए भोग आया है। तो मम्मा ने कहा मैं अकेले तो नहीं खाऊंगी, मैं सारी सभा को स्वीकार कराके खाऊंगी। बाबा ने कहा पहले आप स्वीकार करो फिर सभा को स्वीकार करायेंगे। तो बाबा ने पहले गिट्टी बनाके मम्मा को स्वीकार कराया। भोग स्वीकार कराते हुए बाबा ने कहा आप तो बच्चों की सेवा के लिए एडवान्स में गई क्योंकि अपने राज्य में जो बच्चों का जन्म होने वाला है वो पवित्र जन्म होने वाला है। नये राज्य में जो जन्म लेने वाले बच्चे हैं, तो आप और मेरे महारथी बच्चे ही निमित्त बनेंगे। जैसे यज्ञ की स्थापना में महारथी निमित्त बनें ऐसे इस योगबल की पैदाइस करने के निमित्त ऐसे योगयुक्त बच्चे ही बनेंगे इसलिए ही आप बच्चों को यह पार्ट बजाना पड़ रहा है। तो बाबा ने आज यह राज़ खोला।

मम्मा और बाबा आपस में बात कर रहे थे, हम लोग जो मुख्य बहनें थी उन्हों से भी चिट चैट कर रहे थे कि देखो आपकी दादियाँ आपके प्रति कितने कार्य के लिए निमित्त बनी। जैसे साकार में महारथी बच्चों ने यज्ञ की स्थापना की और पालना की। वैसे ये नयी स्थापना के निमित्त भी ये मेरे महारथी बच्चे ही बनेंगे। यह चिट-चैट चल रही थी। फिर बाबा ने कहा कि आज सभी दृढ़ संकल्प करो कि अभी से जो भी कार्य करेंगे वो दृढ़ संकल्प से करेंगे, साधारण संकल्प से नहीं। सफलता माना दृढ़ संकल्प। तो दृढ़ संकल्प से सभी मिलके यही आवाह्न करो कि दु:ख और अशान्ति की दुनिया समाप्त होके हमारे सुख का संसार आवे, समय को समीप लाओ। अब यह पार्ट बजाओ।

फिर बाबा ने कहा मम्मा आज आपके लिए यह सब बच्चे आये हैं, आप इन्हों को विशेष क्या सौगात देंगी? मम्मा ने कहा बाबा आप तो सौगात देते ही हो। बाबा ने कहा आज आपका दिन है तो आप कोई सौगात दो। मम्मा ने कहा कि जैसे मैंने दो शब्दों का पुरुषार्थ किया। बाबा ने कहा और मैंने किया। बाबा का कहना और मम्मा का करना। यह दो शब्द सदा सभी स्मृति में रखकर चलते चलेंगे तो बाबा की, मम्मा की, ड्रामा की आपको मदद मिलती रहेगी। यह दो शब्द कभी नहीं भूलना। तो सब वियजी बनके विजयी माला के मणके बनेंगे और भविष्य राज्य घराने में समीप आयेंगे। फिर मम्मा ने दृष्टि देते हुए औरों को भी भोग स्वीकार कराया फिर बाबा से मिलन मनाके सभी से विदाई लेके मम्मा वतन से चली गई। हम भी सभी से मिलन मनाते यहाँ पहुंच गई। ओम् शान्ति।